परती भूमि पर बागवानी: बैज्ञानिक पद्वति

लेखक डा० वी० के० शर्मा, पब्लिशर ए० पी० एच० पब्लिशिंग कारपोरेशन ५, अंसारी रोड़, नई दिल्ली, मूल्य ५०० रू०

परती भूमि के क्षेत्रफल में हो रही उत्तरोतर बढ़ोतरी भारत जैसे कृषि प्रधान देश के लिए एक अत्यन्त कठिन समस्या है। इस समस्या का निदान सम्भव है। यदि परती भूमि में आवश्यक सुधार लाकर उसे उत्पादक क्षेत्रों मे परिवर्तित किया जा सके। परन्तु आवश्यक तकनीकी व जानकारी के अभाव में इस सन्दर्भ में समुचित क्रियान्वयन नही हो पाया हैं। *परती भूमि पर बागवानी: बैज्ञानिक पद्वति* इस दिशा में एक प्रसंसनीय कदम हैं, जन साधारण को हिन्दी भाषा में लिखी गई यह पुस्तक आम जन मानस को तकनीकी ज्ञान सुगमता पूर्वक पहुँचा पायेगी। पुस्तक में १५ अध्याय हैं जो कि परती भूमि की पहिचान 'अध्याय २' से लेकर उसके सुधार 'अध्याय ४' व भविष्य की योजनाओं 'अध्याय १५' तक विविध विषयों पर तथ्यात्मक जानकारी प्रदान करते हैं। अध्याय ११ मे फलों की बागवानी पर दी गयी जानकारी भी लाभप्रद हो सकती हैं।

बिषय वस्तु की गम्भीरता को देखते हुए यह बताने मे भी हिचकिचाहट नहीं होगी कि लेखक, डा० वी० के० शर्मा, ने पुस्तक मे अधिकत्तर स्थानों पर अत्यन्त सामान्य जानकारी समाहित की हैं। जबकि बिषय की गहराई तक पहुँचने के लिए कुछ बिशेष जानकारियों को भी देना आवश्यक होगा। जैसे भारत के जैव भौगोलिक क्षेत्रों के अनुसार परती भूमि सुधार हेतु प्रजातियों का चयन व उनका रोपण; सुधार सम्बन्धी समस्याओं के अन्तर्गत जल आपूर्ति इत्यादि पर समुचित जानकारी। कुछ स्थानों पर लेखक द्वारा तकनीकी शब्दों के कठिन हिन्दी अनुवाद का प्रयोग पुस्तक को जन साधारण की समझ से दूर करता प्रतीत होता हैं। इसी प्रकार रेखाचित्रों व विषय परक सारणियों का अभाव पुस्तक की सुगमता कम करते हैं। आशा की जानी चाहिए कि लेखक आगामी संस्करणों मे इन बातो को ध्यान मे रखेंगे।

कुल मिलाकर लेखक का यह प्रयास स्वागत योग्य हैं, परन्तु पुस्तक का मूल्य रू० ५०० इसे आम जनता की पहुँच से दूर ही रखेगा, जिससे लेखक व पुस्तक अपने उद्देश्य को पाने मे असमर्थ रहेंगे।

आर० एस० रावल